आदि प्रमुख कहानी संग्रह है।

आधुनिक युग :- 1950 ई० से इसमें कथ्य तथा शिल्प आदि भावों का वर्णन देखने को मिलता है। इसमें नयी कहानी का वर्णन देखा जाता है। इसमें नई कहानियाँ नये नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। आधुनिक युग में कहानियों का नया रूप देखने को मिलता है। इसमें प्रमुख कहानीकार मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, मन्नू भंडारी है आधुनिक युग की कहानी मलबे का मालिक है। इसमें व्यक्ति के अंतर्द्वन्द्व का वर्णन है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक समस्याओं का उभरा हुआ रूप आधुनिक युग में देखने को मिलता है।

निष्कर्ष :- इस प्रकार हम कह सकते है कि हिन्दी कहानी का उद्भव तथा विकास में सामाजिक, ऐतिहासिक रूप भी देखने को मिलता है। इसमें सामाजिक कुरीतियाँ, जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास आदि को दूर करने का प्रयास किया गया है इसमें हम निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि इतने वर्षों मे हिन्दी कहानी को इतना नहीं लिखा गया जितना कि अब

Page:
Date: / /

प्र०-1. हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास / विकास क्रम, प्रेमचन्द का स्थान —

उ०- भूमिका :- 18 वीं सदी के अंत में यूरोप में उपन्यास लिखने की परंपरा का विकास हुआ। सर्वप्रथम इस विधा ने बांग्ला साहित्य को प्रभावित किया। बाद में बांग्ला साहित्य से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य में भी उपन्यास लिखने की परंपरा का विकास हुआ उपन्यास लिखने की परंपरा संस्कृत भाषा में नहीं आई। संस्कृत पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश आदि में नीति कथाएं और आख्यान आदि काफी मात्रा में मिलते हैं। लेकिन उपन्यास नहीं मिलते। हिन्दी में जो प्रथम उपन्यास है। इस पर मतभेद है। श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 18 वीं में 'भाग्यवती' उपन्यास लिखा। लाला श्री निवास दास ने 1882 ई० में 'परीक्षा गुरु' उपन्यास लिखा श्रद्धाराम फिल्लौरी के उपन्यास में उपन्यास के सभी गुण विद्यमान नहीं थे। इसके विपरीत 'परीक्षा गुरु' उपन्यास के गुणों पर खरा उतरता है। इसलिए इसे हिन्दी साहित्य का पहला उपन्यास माना जाता है।

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम को प्रेमचन्द को आधार बनाकर चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

1. प्रेमचन्दपूर्वयुग (सन्1877 - 1918)
2. प्रेमचन्द युग (सन्1918 - 1936)
3. प्रेमचन्दोत्तर युग (सन्1936 - 1950)
4. आधुनिक युग (सन्1950 से अब तक)

लेते हो

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

→ भूमिका :- भारतीय साहित्य में नाटकों की समृद्ध परंपरा देखी जा सकती है नाटक समाज को दर्शाने का कार्य भी करते हैं कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' संसार के श्रेष्ठ नाटकों में से एक है इस युग में नाटकों की काव्यात्मकता की अधिकता होती थी और ये नाटक रंगमंच पर दर्शाने का भी कार्य करते हैं हिन्दी में नाटक का आरंभ अंग्रेजी शासन से पहले ही हो चुका था हिन्दी नाटक का उद्भव भक्ति से हुआ।

→ हिन्दी नाटक का उद्गम :- सही अर्थों में हिन्दी नाटक का उद्गम पारसी रंगमंच में समय में हुआ था इस प्रकार ब्रजभाषा में भी अनेक नाटकों की रचना हुई जैसे - महाराजा भगवंत सिंह द्वारा अनूदित 'प्रबोध चन्द्रोदय' नवाब कवि द्वारा अनूदित 'शकुन्तला नाटक' आदि ये सभी मौलिक नाटक हैं भारतेंदु ने अपने पिता गोपाल चन्द्र गिरिधर दास कृत 'नहुष' नाटक को हिंदी का पहला नाटक माना जाता है

→ हिंदी नाटक का विकास :- हिंदी नाटकों की परंपरा

प्रेमचन्द युग :- प्रेमचन्द हिन्दी युग के प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने
नी कहानियों में परिवेश से आस-पास के
वन से जुड़े तत्वों का वर्णन किया है। उनकी
कहानी में ग्राम्य जीवन का वर्णन है। उनके
कहानियों के प्रत्येक पात्र हर वर्ग, जाति, धर्म
से संबंधित है। प्रेमचन्द की प्रथम कहानी
पंच परमेश्वर जो कि 1916 में प्रकाशित हुई तथा अंतिम
कहानी कफन जो कि 1936 में प्रकाशित हुई। उन्हों
300 से भी अधिक कहानियाँ लिखी। जो
मानसरोवर के 8 खण्डों में प्रकाशित हुई।

कहानियाँ :- बड़े घर की बेटी, ठाकुर का कुआँ, शतरंज के खिलाड़ी आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है।

प्रेमचन्द में जयशंकर प्रसाद भी दूसरे कहानीकार हैं,
न्होंने 69 कहानियाँ लिखी। आकाशदीप, पुरस्कार,
गुण्डा आदि कहानियाँ उल्लेखनीय है। इसमें
विश्वम्भर नाथ कौशिक भी प्रसिद्ध कहानीकार
रहे है। उन्होंने ताई, काकी, पगली, शांति
आदि कहानियां लिखी। उनकी कहानियों में विषय
के अनुसार तत्सम शब्द तथा संस्कृत निष्ठ है।
ताई उनकी प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी
से ही उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त हुई।
विश्वम्भर नाथ कौशिक ने बाल विवाह, दहेज
प्रथा, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास तथा रूढ़ियों आदि
कुरीतियों को आधार बनाकर अपनी कहानियाँ
लिखी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि
इस युग में सामाजिक तथा ऐतिहासिक
कहानियों का भी उल्लेख किया गया है।

प्रश्न :- हिन्दी कहानी का उद्भव तथा विकास ?

भूमिका :- अनादि काल में मनुष्य किसी न किसी रूप कहानी कहता है तथा सुनाता है। यही कारण है कि सारे संसार के सभी देशों में कथात्मक तथा उपदेशात्मक कहानियों का लंबा इतिहास देखा जाता है। भारत में ऋग्वेद, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, जातक साहित्य, पुराण आदि में असंख्य कहानियां देखने को मिलती हैं परंतु आधुनिक कहानी का स्वरूप सर्वथा भिन्न है। उसमें मात्र वर्णनात्मक तथा उपदेशात्मक कहानी है। तब हिन्दी का स्वरूप अंग्रेजी तथा इससे प्रभावित बांग्ला कहानी के अनुकरण का परिणाम है।

हिन्दी की प्रथम कहानी को लेकर अनेक विद्वानों अलग-2 मत है। उनके सभी मतों में भेद पाया जाता है। कुछ विद्वानों इंशा अल्लाह खां के द्वारा रचित 'रानी केतकी की कहानी' को प्रथम कहानी माना गया है। इन्दुमती, ग्यारह वर्ष का समय, बंग महिला की (दुलाई वाली) कहानी सरस्वती नामक पत्रिका में लिखी गई है, परंतु आधुनिक के शोध के आधार पर माधव प्रसाद के

प्रेमचन्दोत्तर युग :- यह युग (1936-1950) का है। इसमें अनेक प्रकार की कहानियों का वर्णन देखने को मिलता है। इसमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा मार्क्सवादी तथा आँचलिक कहानियों का उल्लेख किया गया है।

* मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :- इसमें प्रमुख कहानीकार जानेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी प्रसिद्ध कहानी कार है। जैनेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक का वर्णन किया है। उन्होंने समाज की समस्याओं को भी बताया है। जानेन्द्र जी की कहानी पाजेब तथा फाँसी प्रमुख कहानी है।

* मार्क्सवादी :- इसमें मार्क्सवादी, प्रगतिवादी, समाजवादी की कहानियां लिखी गई है। इसमें प्रमुख कहानीकार यशपाल जी है। इन्होंने धर्मयुद्ध, वो दुनिया नामक कहानी लिखी है।

* आँचलिक कहानी :- इसमें पृथ्वी के किसी प्रमुख भू-भाग को पिछड़े युग की समस्या का वर्णन किया जाता है। इसे ही आँचलिक कहानी का आधार मान जाता है। इसमें प्रमुख कहानीकार फणीश्वर नाथ रेणु तथा नागार्जुन है। इन्होंने अपनी कहानियों में आँचलिकता को अधिक महत्व दिया है। उनकी कहानियां 'तीसरी कसम'

Page No. □□□

की शुरुआत भारतेन्दु-युग में हुई जयशंकर प्रसाद हिंदी नाटक में मील का पत्थर हैं उन्हीं के नाम पर ही हिन्दी नाटकों का वर्गीकरण किया जा सकता है हिन्दी नाटक के विकास को चार भागों में बाँटा जा सकता है →

i) भारतेंदु युग ii) प्रसाद युग iii) प्रसादोत्तर युग iv) आधुनिक युग

→ भारतेन्दु युग :-

भारतेन्दु जी ने अनूदित व मौलिक दोनों प्रकार के नाटकों की रचना की है उनके मौलिक नाटकों में 'वैदिकी हिंसा न भवति', 'विषस्य विषमौषधम्', 'चन्द्रावली', भारत-दुर्दशा आदि प्रमुख हैं इस युग के प्रमुख नाटककारों में बालकृष्ण भट्ट, राधा चरण गोस्वामी, रायकृष्ण दास, लाला श्री निवासदास आदि का नाम लिया जा सकता है इस युग के नाटकों को विषय वस्तु के आधार पर पांच भागों में बांटा जा सकता है - सामाजिक नाटक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक व रोमांटिक नाटक। इस युग में बालकृष्ण भट्ट ने 'रेगगती स्वयंवर', 'वेणी संहार' जैसे पौराणिक व ऐतिहासिक नाटकों की रचना की दूसरी ओर 'नई रोशनी का दोष' 'जैसे काम वैसा परिणाम' आदि जैसे सामाजिक नाटकों की रचना की। इस प्रकार इस युग में ऐतिहासिक, सामाजिक आदि नाटकों की रचना हुई।

→ प्रसाद युग :-

प्रसाद जी ने अपने जीवनकाल में ऐतिहासिक नाटकों की रचना की उन्होंने नाटक के लिए रंगमंच व समय का भी ध्यान रखा कहा कि नाटक के लिए रंगमंच होते है न कि रंगमंच के लि नाटक। उनके द्वारा रचित नाटक 'करुणालय', 'विशा', 'कामना', एक घूंट, ध्रुवस्वामिनी' आदि विशाख प्रथम नाटक माना जाता है। इस युग के नाटकों में राष्ट्र-प्रेम की भावना की प्रधानता है। इस युग के नाटकों को 3 पौराणिक, ऐतिहासिक व सामाजिक नाट में बांटा है। इस प्रकार इस युग में प्रेमचन्द ने ऐतिहासिक नाटक 'कर्बला' भी लिखा और सामाजिक नाटक लिखा। इस प्रकार इस काल में ऐतिहासिक और सामाजिक नाटक लिखे गए।

→ प्रसादोत्तर युग :-

इस युग में प्रसाद की मृत्यु के बाद सन् 1937 से 1950 के नाटक भी शामिल है। इस युग के नाटकों को चार भागों में बांटा जा सकता है - सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व सामाजिक, राजनीतिक व समस्या प्रधान नाटक। ऐतिहासिक नाटक में गोविंद वल्लभ पंत, राजमुकुट, जय-पराजय आदि जिन्होंने जन साधारण में राष्ट्रीय चेतना भरने का प्रयास किया सामाजिक, राजनीति नाटकों में से० गोविंददास, सेवापथ, सन्तोष कहां, अमीरी-गरीबी, राखी की लाज आदि विशेष रूप से लिए जाते है। इन नाटकों में मुख्य रूप से नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह, संयुक्त परिवार के समस्या आदि को उठाया। इस प्रकार इस युग में समस्या प्रधान नाटक लिखे गए।

Page:
Date: / /

अति यथार्थवादिता तथा प्रयोगशीलता के नाम पर अश्लील और कामुक उपन्यास लिखने लगे हैं। जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। फिर भी हम कह सकते हैं कि उपन्यासों का भविष्य काफी उज्जवल है।

दादा कामरेड, पार्टी कामरेड, देशद्रोही, यशपाल जी के प्रगतिवादी उपन्यास है। जिनमें मार्क्स के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस परंपरा के अन्य उपन्यासकारों में राहुल सांकृत्यायन, अमृतराय आदि उपन्यासकारों के नाम गिनवाए जा सकते है। आँचलिक उपन्यासों की परम्परा में काफी उपन्यास लिखे गए है। इस प्रकार के उपन्यासो में पृथ्वी के किसी पिछड़े हुए भू-भाग की समस्याओं का वर्णन किया जाता है। हिन्दी के आँचलिक उपन्यासकारों में फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन आदि के नाम गिनवाए जा सकते है। मैला-आँचल और प्रति-परिकथा आदि रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास है। इस प्रकार इस युग में सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक तथा आँचलिक उपन्यास काफी संख्या में लिखे गए।

आँचलिक

5. आधुनिक युग:- स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी उपन्यास लेखन में अत्यधिक वृद्धि हुई। इस युग में नई पीढ़ी के उपन्यासकार हमारे सामने आए है। आधुनिक पीढ़ी के उपन्यासकारों में मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, श्रीमती मन्नू भंडारी आदि के नाम गिनवाए जा सकते है। 'अंधेरे बंद कमरे में' राकेश जी का प्रसिद्ध उपन्यास है। 'मानव चला गया' मन्नू भण्डारी का उल्लेखनीय उपन्यास है। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में उपन्यास काफी मात्रा में लिखे गए। आधुनिक युग में बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, मध्यवर्ग को आधार बनाकर उपन्यास लिखे।

निष्कर्ष:- हिन्दी का वर्तमान उपन्यास साहित्य अनेक विधाओं में अग्रसर है। आज लोग उपन्यास और कहानी आदि पढ़ने में ही रुचि रखते है लेकिन कुछ उपन्यासकार

द्वारा रचित 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी उल्लेख है। डॉ लालचंद गुप्त 'मंगल' कहानी का उल्लेख किया है।

पूर्वप्रेमचन्द युग
1. प्रेमचन्द युग
2. प्रेमचन्दोत्तर युग
3. आधुनिक युग
4.

1. **पूर्व प्रेमचन्द युग :-** हिन्दी कहानी के विकास की यात्रा 'सरस्वती' तथा इन्दु पत्रिका के प्रकाशन के साथ शुरू हुई है। सन् 1907 मे बंग महिला की (दुलाई वाली) तथा 1909 मे वृन्दावन लाल वर्मा द्वारा रचित 'राखी बन्द भाई' प्रकाशित हुई। इन्दु नामक पत्रिका के साथ ही जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी कहानी के साहित्य में कदम रखा इन्होंने तीनों कहानियाँ ग्राम्य (1910) में तथा रसिया बालम (1912) में तीनों इन्दु नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई। इन तीनों कहानियों में नवीनतम कल्पना की प्रधानता है। इसमें चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का नाम उल्लेखनीय है। उसके द्वारा रचित कहानी 'उसने कहा कि' नामक कहानी अत्यधिक लोकप्रिय हुई। कला की दृष्टि से इसे उत्कृष्ट माना जाता है। इसमें कला की दृष्टि से काफी प्रसिद्धि मिली। 'इन्दुमती' नामक कहानी को ही हिन्दी की प्रथम कहानी माना जाता है। इसे हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी की संज्ञा दी गई है।

1. प्रेमचन्द पूर्व युग → बालकृष्ण भट्ट, श्रद्धाराम फिल्लौरी, श्री निवास दास आदि ने इस काल में उपन्यास लिखे। श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा, जिसमें बीज रूप में उपन्यास के गुण देखे जा सकते हैं। लाला श्री निवास दास ने 'परीक्षागुरु' नामक उपन्यास लिखा। आगे चलकर राधाकृष्ण दास ने 'निस्सहाय हिन्दू' और बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास लिखा। अनुवादिक व मौलिक उपन्यास भी लिखे गए। देवकी नंदन खत्री द्वारा रचित उपन्यास 'चन्द्रकांता' काफी लोकप्रिय हुआ। चन्द्रकांता तिलिस्मी व जासूसी पर आधारित उपन्यास था। अयोध्या सिंह उपाध्याय में 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' उपन्यास लिखा। प्रेमचन्द का पूर्व युग में प्रायः सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलिस्मी जासूसी तथा भाव प्रधान उपन्यास काफी संख्या में लिखे गए।

2. प्रेमचन्द युग :- प्रेमचन्द युग में सामाजिक उपन्यास सबसे अधिक लिखे गए। प्रेमचन्द ने जासूसी तथा तिलिस्मी को पिटारी में बंद हिन्दी उपन्यासों को मुक्त किया और उसे सामान्य जन जीवन से जोड़ा। प्रेमचंद ने नारी समस्या, दहेज प्रथा, शोषण, कृषक समस्या आदि पर आधारित उपन्यास लिखे। प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गोदान' उपन्यास हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है। इसमें इसमें उपन्यासकार ने ग्राम्य जीवन के संदर्भ में

⇒ आधुनिक युग :-

इस युग में 1950 व स्वतंत्रता के बाद भी नाटक लिखे गए इस युग में निम्न वर्ग में अशांत दांपत्य जीवन, बढ़ती भौतिकवादी प्रवृत्ति के साथ-२ समाज में फैलते भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद आदि का भी वर्णन किया और मध्यम वर्ग व उसकी समस्याओं को भी उठाया गया और इस युग के नाटकों को रेडियो पर भी सुना जाने लगा इस युग में मोहन राकेश ने अपने तीन नाटकों - लहरों के राजहंस, 'आषाढ़ का दिन' व आधे-अधूरे' के द्वारा हिंदी नाटक की विकास यात्रा को बढ़ावा दिया आधे-अधूरे नाटक में समान युग की पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं को दर्शाया गया है। इस युग के नाटककारों ने प्रतीकात्मक नाटकों की रचना भी की इस प्रकार इस युग में अनेक समस्याओं से प्रधान और महत्वपूर्ण नाटक लिखे गए।

⇒ निष्कर्ष :-

इस प्रकार कह सकते हैं कि नाटक समाज व रंगमंच को दर्शाने का कार्य करते हैं नाटक की परंपरा प्राचीन काल से ही चली आ रही है नाटक किसी भी समस्या व भावना को लेकर लिखे जा सकते हैं नाटक समय की सीमा का भी ध्यान रखते हैं।

के अन्य उपन्यासकारों में विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, जयशंकर प्रसाद और सियाराम शरण गुप्त आदि के नाम गिनवाए जा सकते हैं। माँ और भिखारणी कौशिक जी के दो प्रसिद्ध उपन्यास हैं। कंकाल, तितली, इरावती जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध उपन्यास हैं। सियाराम शरण गुप्त ने गोद, नारी उपन्यास लिखे हैं। जिनमें नीति और सदाचार पर बल दिया गया है। इस प्रकार इस काल में सामाजिक तथा ऐतिहासिक उपन्यास प्रचुर मात्रा में लिखे गए।

3. प्रेमचन्द्रोत्तर युग :- इस युग में हिन्दी उपन्यास का अत्यधिक विकास हुआ तथा सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक तथा आँचलिक उपन्यास काफी संख्या में लिखे गए।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री इस युग के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं। हृदय की प्यास, दिल्ली का दलाल, बधुवा की बेटी आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। लेकिन भगवती चरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास को साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की। अब उपन्यासकार व्यक्ति के अन्तर्जगत में रूचि दिखाने लगे। फलस्वरूप मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों की परम्परा का श्री गणेश हुआ। इस संदर्भ में इलाचन्द्र जोशी का उल्लेख करना उचित होगा। जिन्होंने लज्जा, सन्यासी, प्रेत और छाया, परदे की रानी आदि उपन्यास लिखे। इस परंपरा को आगे बढ़ाने वालों में जैनेन्द्र कुमार का विशेष महत्व है। सुनीता, सुखदा, त्याग-पत्र आदि। इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

मार्क्सवादी :- चिन्तन से प्रभावित लेखकों में